# कार्यरत माता पिता के बच्चों पर सामाजिकरण के प्रभावों का अध्ययन

**रंजना सिंह[1]; सीताराम सिंह[2]**

[1]शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, जवाहर लाल नेहरू पी. जी. कॉलेज, बाराबंकी सम्बद्ध राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

[2]प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, जवाहर लाल नेहरू पी. जी. कॉलेज, बाराबंकी सम्बद्ध राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

**Corresponding Author Email**: ranjanasingh0117@gmail.com

**शोध सारांश**—यह लेख लखनऊ के SGPGI ( कल्ली पश्चिम) के विभिन्न क्षेत्रों, स्थानों व संगठनों में कार्यरत माता पिता के बच्चों पर सामाजिकरण के प्रभावों के अध्ययन से संबंधित हैं। इसमें एक सामान्य घर व कामकाजी परिवार का अंतर का अध्ययन सम्मिलित हैं। साधारण परिवार में जब सिर्फ पिता कार्यरत हो और मां गृहणी हो तो उस परिवार में बच्चों पर सामाजिकरण का सकारात्मक प्रभाव भी पड़ता हैं। एक कार्यरत परिवार का तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि एक मां को कामकाजी नहीं होना चाहिए। हम इसका समर्थन नहीं करते। कहने का तात्पर्य यह है कि एक मां से बेहतर बच्चे की चिंता और देखभाल कोई और नहीं कर सकता है।

डॉ अम्बेडकर महिलाओं की उन्नति के प्रबल पक्षधर थे। उनका मानना था कि किसी भी समाज का मूल्यांकन इस बात से किया जाता है कि उसमें महिलाओं की क्या स्थिति है। दुनिया की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है इसलिए जब तक उनका समुचित विकास नहीं होता तब तक कोई भी देश चहुमुखी विकास नहीं कर सकता। (अनुच्छेद 14) बच्चों पर पड़ने वाला प्रभाव चाहे सकारात्मक हो या नकारात्मक वह बच्चों के विकास की दशा और दिशा तय करता है।

**मुख्य शब्द**: समाजीकरण, प्राथमिक , द्वितीयक समाजीकरण, मूल्य, मानदंड, संस्कृति, उप संस्कृति, आत्म नियंत्रण, स्व का विकास, कुरीतियां, सामाजिक तथ्य, सामूहिक प्रतिनिधीत्व , बाल्यावस्था , किशोरावस्था, वयस्कता, वृद्धावस्था।

## I. प्रस्तावना

कार्यरत माता पिता के बच्चों का सामाजिकरण में विभिन्न लोगों, संगठनों, तथ्यों व खुद उनका परिवार सम्मिलित होता है । जब बच्चा जन्म लेता है तो सर्वप्रथम बाल्यावस्था तक उसका सामाजिकरण उसके। परिवार में ही होता है ,और यह सर्वविदित है कि बच्चा मुख्यतः अपने मां से अधिक जुड़ा हुआ होता है, उससे बहुत सारे आदतें सीखता है, यदि मां के पास समयाभाव है तो पिता, दादा दादी व अन्य सदस्यों को देखता है और सीखता है।

आचार्य जार्ज हरबर्ट मीड (1863 ऋ1931) ने सामाजिक व्यहवारवाद का एक सिद्धांत विकसित किया ताकि यह समझाया जा सके कि सामाजिक अनुभव किसी व्यक्ति की आत्म अवधारणा को कैसे विकसित करता है।

### रॉबर्ट कैरन

बचपन से शुरू होने वाली वह प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति समाज के मूल्यों, आदतों और दृष्टिकोड़ों को ग्रहण करता है।

### दुर्खीम

इन्होंने सामाजिकरण को सामाजिक तथ्य और सामूहिक प्रतिनिधान के माध्यम से समझने की कोशिश की है दुर्खीम के मुताबिक समाज की परंपराएं, मूल्य, मानदंड, सामूहिक विश्वास आदि सामाजिक तथ्य व्यक्ति से ऊपर होते हैं। व्यक्ति को जन्म से इनकी विरासत मिलती है। इनकी रचना व्यक्ति की अकेली इकाई के हाथों न होकर समूह द्वारा बनाई होती है। ये व्यक्ति से बाहर है और उनके ऊपर बाध्यता भी आरोपित करते हैं।

## II. सामाजिकरण को प्रभावित करने वाले कारक

**परिवार**– परिवार सामाजिकरण का प्राथमिक कारक है। बच्चा जन्म से ही अपने परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों के साथ बातचीत करता है और उनसे दुनिया के बारे में सीखता है।

**स्कूल**– स्कूल सामाजिकरण का द्वितीयक कारक है। यहां बच्चा अपने परिवार से अलग लोगों के साथ मिलता है और स्कूल के मानदंडों, मूल्यों और व्यवहार पैटर्न को अपनाता है।

पड़ोस पड़ोस एक व्यापक और बड़ा परिवार होता है। अगर पड़ोस अनुकूल और रचनात्मक है, तो बच्चे का समाजिकरण सकारात्मक दिशा में होता है।

**धर्म**–बच्चे के समाजीकरण में धर्म का भी अहम योगदान होता है ।जब बच्चा अपने धर्म के बच्चों या दूसरे धर्म के बच्चों से मिलता है तो उसमें सहानुभूति और सहयोग की भावना विकसित होती है।

सामाजिक श्रेणी बच्चों की सामाजिक श्रेणी या जाती, उनके विशिष्ट आदर्शों, दृष्टिकोण, रीति रिवाज और संस्कृति के मुताबिक उन्हें सामाजिक बनाने की कोशिश करती है।

माता पिता के बच्चे से रिश्ते, माता पिता की भाषा, शैक्षिक, सामाजिक स्तर का प्रभाव पड़ता है।

## III. समस्या कथन

सामाजिकरण के दौरान काफी समस्याएं भी उत्पन्न होती हैं जो निम्न हैं।

1. सामाजिकरण के दौरान व्यक्ति को समाज का सदस्य बनाया जाता है। और उसे समाज की क्रियाओं में शामिल होने में सक्षम बनाया जाता है। हालांकि सामाजिकरण के जरिए हासिल किए गए मूल्यों, मानदंडों और व्यवहारों को पहचानना भी जरूरी है।
2. समाजीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति को अपने समूह की संस्कृति या अपसंस्कृति हासिल होती है । इस दौरान व्यक्ति
3. सामाजिकरण की प्रक्रिया जीवन भर चलती रहती है। व्यक्ति की परिस्थितियां और सामाजिक भूमिकाएं बदलती रहती हैं, इसलिए उसे अपने व्यवहार को भी बदलना पड़ता है।

समाजीकरण से जुड़ी समस्याएं

1. आत्मनियंत्रण में परेशानी
2. संचार संबंधी कठिनाइयां
3. भाषा संबंधी कठिनाइयां
4. चिंता और अवसाद जैसी मानसिक समस्या

## IV. बच्चों का सामाजिकरण

एक बच्चे के सामाजिकरण में मुख्य चार चुनौतियां आतीं हैं जैसे प्रकृति और पोषण के बीच संतुलन, अभाव पर काबू पाने, पहचान बनाने और जीवन के चरणों के अनुकूल ढलने जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। समाजीकरण प्रक्रिया को दो मुख्य चरणों में विभाजित किया जा सकता है। प्राथमिक समाजीकरण ( जो बच्चे के जन्म के पश्चात क्रियाएं होती हैं जो वह देखता है और सीखता है) दूसरा है द्वितीयक समाजीकरण जो पास पड़ोस, शिक्षण संस्थाओं और मित्र मंडली में जाकर या सम्मिलित होकर सीखता है। समाजीकरण के चार चरण भी बताएं गए हैं बचपन, किशोरावस्था, वयस्कता और बुढ़ापा। इन सभी चरणों में समाजीकरण जारी रहता है।

## V. समाजीकरण का उद्देश्य

समाजीकरण प्रक्रिया का उद्देश्य व्यक्ति को सामाजिक एवं योग्य प्राणी बनाना है ताकि वह प्रस्थिति और भूमिका के अनुरूप कार्य करें। सामाजिकरण के द्वारा ही व्यक्ति में अहम का विकास होता है आदर्श नियमों का आत्मसात होता है और संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती हैं।

## VI. समाजीकरण का महत्व

समाजीकरण के कुछ लक्ष्य हैं जो निम्न हैं ऋआवेग नियंत्रण सिखाना और विवेक विकसित करना, लोगों को कुछ सामाजिक भूमिकाएं निभाने के लिए तैयार करना तथा अर्थ और मूल्य के साझा स्रोतों की खेती करना। समाजिकरण सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि कुछ संस्कृतियां दूसरों की तुलना में बेहतर या बदतर हैं। समाजीकरण की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि समाजीकरण के बिना हमारे पास स्वयं की कोई सामान्य पहचान नहीं है। समाज के काम करने के लिए, व्यक्तियों का समाजिकरण आवश्यक है। हालांकि यह कैसे होता है यह अलग–अलग है, हर समाज अपने अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए समाजिकरण पर निर्भर करता हैं।

## VII. निष्कर्ष

समाजिकरण एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। यह जन्म से लेकर मृत्यु तक चलने वाली है। समाजिकरण के जरिए लोग समाज के मूल्यों, मानदंडों,रीति रिवाजों और गतिविधियों को सीखते हैं। समाजिकरण के जरिए ही लोग जैविक अस्तित्व से सामाजिक अस्तित्व में बदलते हैं। समाजिकरण के जरिए लोग समाज के कुशल सदस्य बनते हैं समाजिकरण के जरिए लोग समाज की मान्यताओं को स्वीकार करते हैं और सामाजिक मूल्यों के बारे में जागरूक होते हैं। सामाजिकरण के जरिए लोग समूहों के अनुकूल ढलते हैं और उनका अनुमोदन हासिल करते हैं।

समाजिकरण के जरिए लोग अपने व्यक्तित्व व्यवहार और सामाजिक संबंधों को आकार देते हैं। इसके द्वारा लोग संस्कृ ति को आत्मसात करते हैं इस प्रक्रिया में परिवार, दोस्त, पड़ोसी और सहकर्मी जैसे लोग शामिल होते हैं। इसमें समाज की कुरीतियों का पता लगाकर उसमें सुधार करते हैं। समाजिकरण के द्वारा लोग नए समाज में प्रवेश करने पर फिर से समाजिकरण से गुजरते हैं।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जी एच मीड (1934) माइंड ,सेल्फ एंड सोसाइटी, शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस, शिकागो।
2. एच एम जॉनसन (1963) सोशियोलॉजी य ए सिस्टमेटिक इंट्रोडक्शन राटलेज एंड कीगन पाल, लन्दन
3. के डेविस (1960) ह्यूमन सोसाइटी, मैकमिलन , न्यूयॉर्क ।
4. पर्सन्स एंड वेल्स (1960) फैमिली सोशलाइजेशन एंड इंटरेक्शन प्रोसेस , द फ्री प्रेस ग्लेनको इलिनॉय
5. शी हेच कूले (1922) ह्यूमन नेचर एंड द सोशल ऑर्डर , स्क्रीबनर, न्यूयॉर्क